बुन्देली भाषा कृत

बुन्देला सपूत हरदौल

(महाकाव्य)

श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'

Scanned with OKEN Scanner

पुस्तक	**बुन्देला सपूत हरदौल** (बुन्देली भाषाकृत) **महाकाव्य**
रचयिता	श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'
रचना पूर्ण	अगस्त, सन् 2013 ई. (रक्षाबन्धन, सं0 2070 वि.)
संस्करण एवं प्रकाशन	प्रथमवार, 2014 ई. प्रतियाँ – 500
सर्वाधिकार	रचनाकाराधीन
प्रकाशन तत्वावधान	बुन्देली साहित्य एवं संस्कृति सेवा संस्थान 5, प्राध्यापक निवास, राठ रोड, उरई (जालौन) उ.प्र.
प्राप्ति स्थान एवं सम्पर्क	श्रीवास्तव निलय, चुरखी रोड (सरकारी ट्यूब वैल के पीछे गली) बघौरा, उरई, जिला–जालौन (उ.प्र.) – 285001 मोबाइल : 7408439308
आवरण सज्जा व मुद्रक	नाइस ग्राफिक्स, उरई
मूल्य	₹ 280

BUNDELA SAPOOT HARDAUL
(BUNDELI BHASHA : MAHAKAVYA)
BY
SHYAM BAHADUR SHRIVASTAVA

Scanned with OKEN Scanner

बुन्देली भाषाकृत :

बुन्देला सपूत हरदौल (महाकाव्य)

बिबरणी : काए के बाद का

सरल क्रमांक	संक्षिप्त बिबरन	पन्ना क्रमांक
1	2	3
1.	बुन्देली भाषाकृत महाकाव्य : बुन्देला सपूत हरदौल : एक दृष्टि में – युगकवि डॉ. रामस्वरूप खरे	viii
2.	स्वकथन सह आभार ज्ञापन : श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम' (रचनाकार)	ix
3.	ज्ञातव्य ऐतिहासिक तथ्य : रचनाकार	xii
4.	मंगलाचरन : माँ सरस्वती, आव–आव जू गनेस	1
5.	सर्ग और उनका संक्षिप्त विवरण : (हर सर्ग के आदि व अन्त में दोहा, शेष में छन्द रचनाएँ)	
5.1	सर्ग : एक – नमन बुन्देली–बुन्देला–बुन्देलखण्ड सतगुरु, माता–पिता, इष्ट देव, मातृभूमि को नमन करते हुए बुन्देली भाषा, बुन्देला और बुन्देलखण्ड को नमन, हरदौल चरित लेखन का संकेत सभी देवों से सफलता की कामना, इस प्रबन्ध काव्य लेखन के स्थान का विवरण, सभी का जयघोष	3
5.2	सर्ग : दो : ओरछा दरस और हरदौल ओरछा का प्राकृतिक सौन्दर्य वर्णन, ओरछा राजधानी (राज्य) की स्थापना, हरदौल का जन्म, जन्मोत्सव पर बधाई (हरदौल की जन्मकुन्डली, साभार प्राप्त)	9
5.3	सर्ग : तीन : ओरछा में रामराजा पधारे हरदौल के बब्बा साहब महाराजा मधुकर शाह की पत्नी द्वारा अबध से बाल रूप राम को साक्षात अपनी गोद में ओरछा लाकर स्थापित करना	17
5.4	सर्ग : चार : निरभीक कुँअर हरदौल दस वर्ष के बालक हरदौल द्वारा भयंकर शेर के समीप आकर उसको निडर रहकर थपथपाना, पिता के पूछने पर उनें मनोवैज्ञानिक तथ्य बताते हुए समझाना	26

1	2	3
5.5	सर्ग : पाँच : साउन तीज पै झूला ओरछा में सावन तीज महोत्सव पर मेला का वर्णन, हरदौल के विवाह का वर्णन, सावन में बहन–बेटियों का महत्व, उत्सव के विशेष खेलों जैसे पत्थर नाल उठाना, तीर से लौंग काटना, अन्त में फूलबाग में राजमहिषियों का झूला झूलना, हरदौल का भाभी चम्पावती के मुकाबले में झूला का खेल आदि, जगमन खँगार आदि में हरदौल की प्रतिभा के कारण ईर्ष्या व द्वेष पैदा होना	32
5.6	सर्ग : छै : तरबारबाज हरदौल फारस देश का तलबारवाजी में विशेष पारंगत मेंहदी हुसैन से तलवारबाजी के माध्यम से जगमन व उनके साथियों द्वारा हरदौल को जान से मरवा देने का षड़यन्त्र एवं प्रयास, अन्त में उससे विजयी रहने पर हुसैन द्वारा हरदौल पर प्राणघातक हमला	44
5.7	सर्ग : सात : भइया हरदौल ओरछा के एक सौनी की बिटिया की जेबरात आदि देकर गौंने की बिदा बहुत आदर सम्मान से करना, रोती बिलखती बिटिया का गुप्त संकट दूर करना, तथा घोषणा करना कि ओरछा की हर बिटिया की बिदा उनके यहाँ से अवश्य होगी, उनका तभी से वह 'भइया हरदौल' कहलाना आदि	59
5.8	सर्ग : आठ : ओरछा में दंगल हरदौल द्वारा दंगल का ओरछा में आयोजन, अनेक प्रदेशों के पहलवालों की भागीदारी व्यवस्था एवं ओरछा का दृश्य वर्णन, भारी भरकम एवं लँगोट घुमाने वाले मल्ल से ओरछा का 15 वर्षीय मल्ल का जीतना और 'बुन्देलखण्ड शार्दूल' की उपाधि प्राप्त करना, बाला और बेला का प्रेम– प्रसंग	68
5.9	सर्ग : नौ : धरती के देव हरदौल देव बाला और बेला के प्रेम वार्तालाप के बीच, राजवैद्य की कोठी से उनके बेटे की साँप के काटने से मृत्यु पर हा–हाकार, साँप के काटने पर मरे पुत्र को हरदौल द्वारा जीवनदान, हरदौल की जै – जैकार, धरती के देवता घोषित	80
5.10	सर्ग : दस : क्रान्तिकारी बीर स्वतंत्रता सेनानी बुन्देला सपूत हरदौल हिन्दू धर्म बिरोधी एवं धर्म ग्रंथों को फाड़ गालियाँ बक रहे दो मुगल सेनानायकों को 16 वर्ष की उम्र में अकेले ही मार गिराना, हरदौल द्वारा श्रेष्ठ सेना का गठन, जहाँगीर द्वारा ''बीर बुन्देला'' पद से बिभूषित किया जाना, नृप जहाँगीर को उनके सेनापति द्वारा बन्दी बनाये जाने पर शरण में आई नूरजहाँ के साथ जाकर भारी सेना पर 18–19 वर्ष की आयु में चढ़ाई कर विजय प्राप्त कर जहाँगीर को कैद से छुड़ाना, शाहजहाँ द्वारा किये गये आक्रमणों में सदा विजय प्राप्त करना	88

Scanned with OKEN Scanner

1	2	3
5.11	सर्ग : ग्यारा : जुझारसिंह की ओरछा वापसी शाहजहाँ के शासनकाल में आगरा से उसकी अनुमति बिना रातों रात आगरा से ओरछा चोरों की भाँति भाग कर आ जाना	101
5.12	सर्ग : बारा : महारानी के चरित पै आसंका जगमन द्वारा दी गई सेविका (कुटनी) के माध्यम से महारानी चम्पावती के प्रति हरदौल के साथ दुष्चरित्रता (अनैतिक संबध) का बीज बोया जाना, जुझार सिंह के मन में रानी के प्रति शंका पैदा होना	108
5.13	सर्ग : तेरा : ओरछेस सम्मान सभा आगरा छोड़कर आने पर महाराज का सार्वजनिक सम्मान आयोजन, जुझार सिंह द्वारा प्रजा को उद्‌बोधन एवं निराश प्रजा को हरदौल का उत्साह पूर्ण सम्बोधन	116
5.14	सर्ग : चउदा : सड़यंत्र रहस्स सम्मान सभा समापन बाद हरदौल का घर पहुँचना, पत्नी हिमांचल कुँवरि द्वारा चम्पा भाभी के साथ हरदौल के दुष्चरित्र के लांछन की बात बताना, कौन–कौन षड़यंत्री हैं के रहस्य को उद्‌घाटिक करना/बताना	124
5.15	सर्ग : पन्द्रा : नारी सत्व रक्छा शाहजहाँ के मुख्य जाजूस हिदायत खाँ का ओरछा पहुँचना, कूटनीति और आपस में फूट डालकर ओरछा से जुड़े योद्धाओं या प्रमुख वीरों को यत्र–तत्र भिजवा देना, फूलबाग का सौन्दर्य और व्यवस्था वर्णन, हिदायत खाँ के बेटे महमूद को हरदौल की हत्या संबंधी पत्र हिदायत खाँ को देने ओरछा भेजना, महमूद द्वारा फूलबाग में वहाँ के प्रमुख माली की बेटी से कामुक होकर छेड़ाखानी, उसकी सुरक्षा में हरदौल द्वारा महमूद का बध	133
5.16	सर्ग : सोरा : परीक्छा समस्त हरदौल बैरियों – हिदायत खाँ, जगमन खँगार, कुटनी सेविका, पहाड़सिंह, प्रतीतराय, रानी हीरा देवी आदि की विचित्र एवं भिन्न–भिन्न भूमिकायें, हरदौल और रानी (भौजी) चम्पावती की आसनाई (गलत सम्बंधों) का प्रचार करना और भइया जुझार सिंह और हरदौल में बैर पैदा करना, हरदौल को उनकी पत्नी हिमांचल कुँवरि से सारी घटना ज्ञात होना, हरदौल और चम्पावती द्वारा रामराजा मंदिर में परीक्षा देना, हरदौल द्वारा जहरयुक्त भोजन करना, हरदौल की मृत्यु और करुणा क्रन्दन, अन्तिम संस्कार के समय हिमांचल कुँवरि द्वारा पति हरदौल के शव को चिता पर पान खिलाना, सत्यता को प्रमाणित करने हेतु हरदौल के शव का मुँह खोलकर पान खाना, दाह संस्कार बाद दुखी जनता को हरदौल द्वारा देवरूप में आकाशवाणी से धैर्य बँधाना	146

Scanned with OKEN Scanner

1	2	3
5.17	सर्ग : सत्रा : भतइया हरदौल देव हरदौल की सगी बहन कुंजकुँवरि द्वारा बिटिया के विवाह में समाधि पर जाकर भात माँगना, हरदौल द्वारा अपने कोषाधिकारी धरमपाल के माध्यम से उनके साथ शहीद वीरों की कन्याओं के घर धन पहुँचाकर विवाह की व्यवस्था करना, बहन कुँजावती को प्रगट होकर भात पहनाना एवं भनिज दामाद को प्रगट होकर भोजन कराना और नेग में अपनी जागीर में से पाँच गाँव देना, भान्जी के सम्पूर्ण विवाह में अप्रकट रूप से कार्य करना	167
5.18	सर्ग : अठारा : करनी – भरनी हरदौल की मृत्यु उपरान्त, ओरछा नगर के लोगों और हरदौल की पत्नी का ओरछा छोड़कर चले जाना, जुझार सिंह राजा को सबके द्वारा मन से त्याग दिया जाना, ओरछा पर हिदायत खाँ का आधिपत्य, शाहजहाँ द्वारा जुझार सिंह और उसके बेटे विक्रमाजीत का सिर कटवा लेना और राज्य को हथया लेना, जुझार सिंह के पुत्रों की दुर्गति करवाना और उन्हें मुसलमान बनवाना । जुझार और बेटे विक्रमाजीत के कटे सिरों को औरछा में चौराहे पर टँगवाया जाना । अन्त में उनके सिर के साथ रानी चम्पावती का सती होना ।	179
6	अन्त में : हरदौल देव की आरती, बिनती के साथ महाकाव्य का समापन। श्री हरदौल देव चालीसा, बुन्देला सपूत हरदौल देव ओरछा क वंशावली एवं बुन्देला शासकों की विवरणी। कवि श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम' की वंश विवरणिका। श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम' : एक संक्षिप्त परिचय। इति	182

Scanned with OKEN Scanner

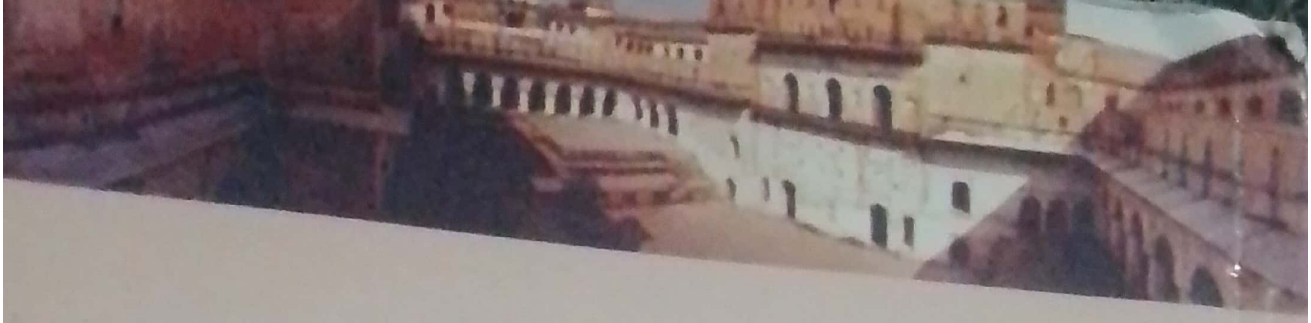

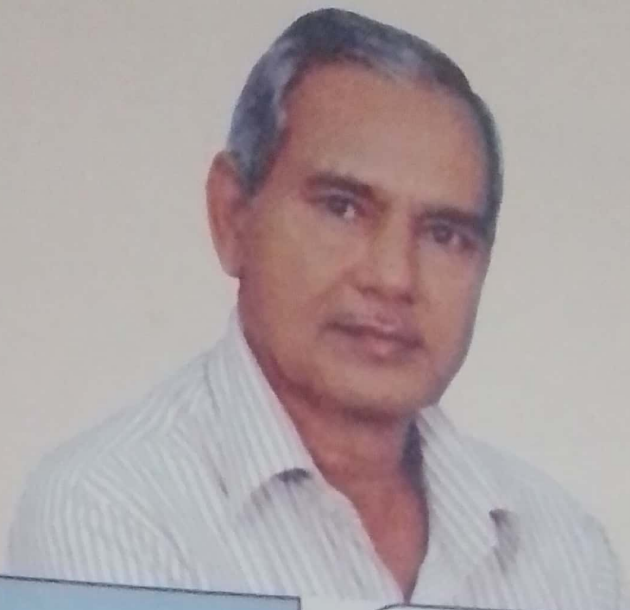

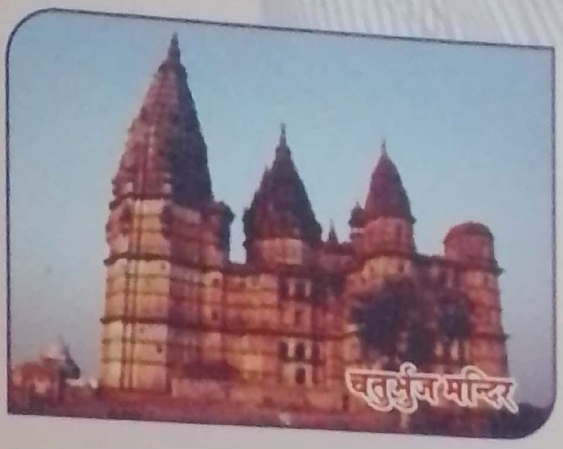

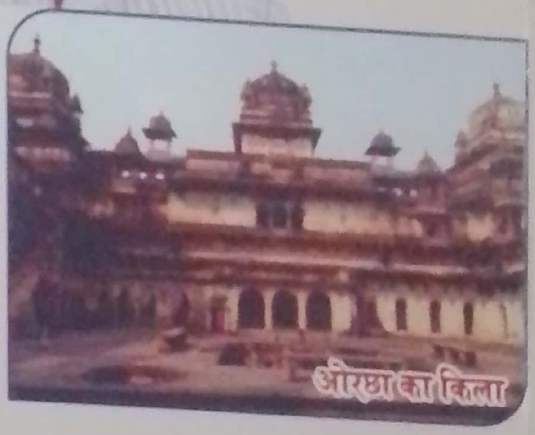

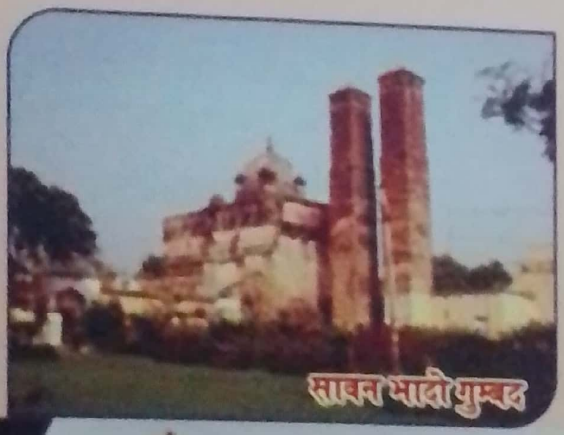

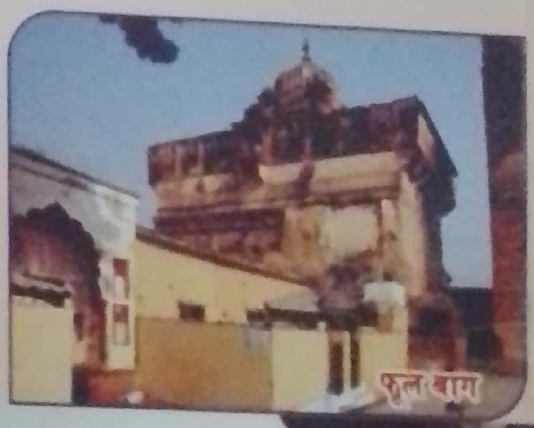

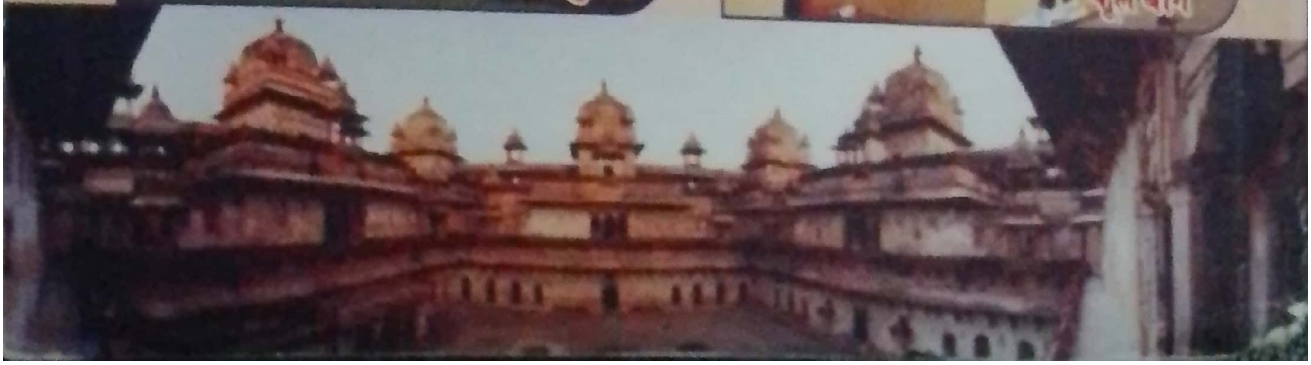

Scanned with OKEN Scanner